बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर, बिहार
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

बुलेटिन संख्या- 60/2026 **दिनांक-04 अगस्त, 2026**

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(05-09 अगस्त, 2026)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

भारत मौसम विज्ञान विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार, पूर्वानुमान अवधि 05-09 अगस्त के दौरान, दक्षिण बिहार के जिलों में आसमान में घने बादल छाए रहेंग एवं एक- दो स्थानों पर गरज-चमक के साथ आंधी, चलने एवं मध्यम वर्षा होने का अनुमान है । हालाँकि अरवल, औरंगाबाद, भोजपुर, बक्सर, जहानाबाद, गया, रोहतास जिलों में एक- दो स्थानों पर गरज-चमक के साथ भारी वर्षा भी हो सकती है। अधिकतम तापमान 34-36 डिग्री सेंटीग्रेड और न्यूनतम तापमान 26-27 डिग्री सेंटीग्रेड रहने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80-90 प्रतिशत तथा दोपहर में 70-75 प्रतिशत रहने की संभावना है। पूर्वानुमान अवधि में 10-15 किमी/घंटा की गति से दक्षिणपूरबा हवा चलने का अनुमान है।

फसल	समसामयिक सुझाव
धान	धान की रोपनी का कार्य यथाशीघ्र अगस्त माह के प्रथम सप्ताह में ही पूरा कर लें, अन्यथा पैदावार में 15 से 20% की कमी हो सकती है। उपज की भरपाई के लिए, धान की रोपाई के लिए 18-25 दिन पुराने पौधों (नर्सरी) का उपयोग करें और पौधों के बीच की दूरी घटाकर 15×15 सेमी करें। धान की रोपाई के समय सामान्य से अधिक स्वस्थ पौधों का रोपण करें, ताकि पौधों की संख्या बनी रहे तथा नमी की कमी से होने वाले संभावित नुकसान की भरपाई हो सके।
अरहर/ मक्का	पारंपरिक धान-गेहूँ के फसल चक्र की जगह, फसल विविधीकरण को अपनाएँ और ऊपरी भूमि या पानी की कमी वाले क्षेत्रों में, धान की जगह अरहर (उन्नत किस्में जैसे कि मालवीय **13,** आईपीए **203,** पूसा **992,** यूपीएएस **120,** राजेंद्र अरहर-**1,** बहार) को लगाएं। बुवाई के समय बीज की दर में **15-20%** की वृद्धि करें। मेड़-नाली विधि से बुआई करना ज्यादा उपयुक्त है। किसान अरहर की खेती मेड़ों पर भी कर सकते हैं और अरहर के साथ मिश्रित खेती भी अपना सकते है जैसेः अरहर मक्का (**1:1),** अरहर तिल (**2:1)** और अरहर + उड़द (**1:2)**। अन्य वैकल्पिक फसलों को जैसे कि मक्का (डीकेसी **9081** और सूखा-सहनशील हाइब्रिड-डीएचएम-**117,** एचक्यूपीएम-**1,** एचक्यूपीएम-**5,** शक्तिमान -**1,** शक्तिमान-**4)** और रागी (वीएलएम **379,** आरएयू **8,** बांकुला) भी लगा सकते हैं।
सब्जियाँ	खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी आसमान साफ रहने पर ही करें। खेत की जुताई के समय प्रति हेक्टेयर 150-200 क्विंटल अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। मानसून के दौरान प्याज की नर्सरी को खरपतवार-मुक्त रखें। जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ समय पर निराई-गुड़ाई करें। तेज धूप से पौधों की सुरक्षा के लिए नर्सरी क्यारी के ऊपर 6-7 फीट की ऊँचाई पर शेड नेट लगाएँ। मिर्च, अगात गोभी, टमाटर की नर्सरी आसमान साफ रहने पर ही स्थापित करें
बागवानी	आम के पौधों के रोपण का उपयुक्त समय है। कलमी पौधों की रोपाई 10×10 मीटर तथा बीजू पौधों की 12×12 मीटर दूरी पर करें। सघन बागवानी के लिए 5×5 मीटर तथा अम्रपाली के लिए 2.5×2.5 मीटर दूरी रखें। फलदार वृक्षों में प्रतिवर्ष 1 किलोग्राम नाइट्रोजन, 300 ग्राम फॉस्फोरस, 700 ग्राम पोटाश तथा 80-100 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद का प्रयोग करें। केला-वर्तमान समय में स्वस्थ सकर्स की रोपाई करें। लंबी किस्मों (अल्पान, कँथली, मालभोग, चिनिया, जी-9) तथा बौनी किस्मों (ग्रैंड नेन, रोबस्टा, बसराई) का चयन करें। लंबी किस्मों के लिए 2.0×2.0 मीटर तथा बौनी किस्मों के लिए 1.5×1.5 मीटर दूरी रखें। प्रत्येक गड्ढे में 5 किग्रा गोबर की खाद, 500 ग्राम अरंडी की खली, 300 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 100 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 10 ग्राम कार्बोफ्यूरॉन मिलाएं। रोपाई से पहले सकर्स को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/लीटर पानी से उपचारित करें। टिशू कल्चर पौधों का उपयोग अधिक उत्पादन के लिए लाभकारी है।
पशुपालन	पशुओं में PPR, FMD (खुरपका-मुंहपका) एवं HS (गलघोंटू) रोगों का खतरा अधिक है, अतः पशुओं का समय पर टीकाकरण कराएं, उन्हें स्वच्छ एवं सूखा रखें तथा बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें। रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें और पशुओं की अनावश्यक आवाजाही पर नियंत्रण रखें। गलाघोटू एवं लंगड़ी रोग से बचाव के लिए जून माह में टीके नही लगायें हो तो इस माह में अवश्य लगवा दें । पशुओं को संतुलित एवं पौष्टिक आहार दें।